




गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

सलोकु ॥

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥

सतिगुरए नमह ॥ स्त्री गुरदेवए नमह ॥१॥





असटपदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥

कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥

सिमरउ जासु बिसुमभर एकै ॥

नामु जपत अगनत अनेकै ॥

बेद पुरान सिम्रिति सुधाख्यर ॥


कीने राम नाम इक आख्यर ॥


किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥

ता की महिमा गनी न आवै ॥

कांखी एकै दरस तुहारो ॥

नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥





सुखमनी सुख अम्रित प्रभ नामु ॥

भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥

प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥


प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥

प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥

सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥





प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥

प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥

प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥

प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥

प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥

प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥


प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥

प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥


से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥

नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥





प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥





प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥

प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥

प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥

प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥

प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥


प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥


प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥

प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥

सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥

नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥





प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥

प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥

प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥

प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥

प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥


प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥

प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥

नानक सिमरनु पूरे भागि ॥६॥





प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥

प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥

प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥

प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥

प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥

प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥


प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥

सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥

सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥

नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥





हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥

हरि सिमरनि लागि बेद उपाए ॥

हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥

हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥

हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥

सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥

हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥

हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥

करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥

नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ

॥८॥१॥

